ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 242-246
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

# गोरख पांडे का साहित्य और भोजपुरी जन ध्वनि

**संदीप राय**
शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, दी0द0उ0 गोरखपुर विश्वविद्यालय,
गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received- 13.07.2020, Revised- 16.07.2020, Accepted - 20.07.2020 E-mail: sandeedsocio@gmail.com

***सारांश :*** *इस शोध पत्र में, मैं भोजपुरी के क्रांतिकारी सुधारवादी लेखक गोरख पांडे के साहित्य को देखता हूं, जिन्होंने नाटककार भिखारी ठाकुर की रचनाओं के विपरीत मुख्यतः कविताएँ और गीत लिखे हैं। निश्चित रूप से, जिस तरह से पांडे का साहित्य समाज से संबंधित है, उसका अलग आकर्षण है। भोजपुरी क्षेत्र के सामाजिक राजनैतिक क्षेत्र से सम्बंधित होने के बावजूद, पांडे की कार्य–भावना एक सौंदर्य शास्त्र भरे उद्यम से सम्बंधित है, जिसका चित्रण मुख्यतः लोक–भाषाओं से है, राजनीति कुछ तौर–तरीकों में संवेदनाओं को लेकर रैन्सीयर कहते हैं कि पहले राजनीति में एक समुदाय की संस्था के साथ एक संभावना बन जाती है, जबकि एक समुदाय अपना आरंभ किसी एक समान चीज से करता है। यह समानता किसी राज्य–क्षेत्र मेंमाल का कोई साझा स्टॉक या सहभाजित दावा नहीं है। बल्कि यह तो समझदारी का साझा विभाजन है। अर्थ की सामान्य रूपरेखा के आस पास समुदाय प्रमुख है। दूसरे शब्दों में, जिस समानता पर समाज की स्थापना होती है वह इन्द्रिय पर है और राजनीति पहले व्यावहारिक ज्ञान के संस्थान के साथ एक संभावना बन जाती है। इसके अलावा, समझ से कियागया यह बंटवारा सौंदर्य परक उपक्रम है, और राजनी ति में दांव पर लगा है सौंदर्य शास्त्र।*

***कुंजीभूत शब्द– क्रांतिकारी , सुधारवादी, सौंदर्य शास्त्र, व्यावहारिक ज्ञान, संवेदनाओं , समझदारी, रूपरेखा ।***

सौंदर्य और समझ के वितरण के बीच और अन्त में सौंदर्यशास्त्र और भोजपुरी क्षेत्र एवं दिक् में एक अनूठी और नई चीज देखने को मिल जाती है जिसे हम लोगों की आशा को उनकी एहसास और उनकी अनुभूतियों के सन्दर्भ में समझ सकते है ऐसे में राजनीति एवं राजनीति शब्द की एक सटीक समझ की आवश्यकता है। रैंसियर के अनुसार, सौंदर्य शास्त्र कलात्मक प्रथाओं का कोई सेट नहीं है और न ही इन प्रथाओं से संबधित सामान्य सिद्धांत। वास्तव में सौंदर्य शास्त्र भी इंद्रियानुभव का एक सिद्धान्त नहीं है। बल्कि अगर राजनीति और सौंदर्य शास्त्र का संबंध उजागर होना है, तो रैंसियर कहते हैं कि शुद्ध तर्क के आलोचक कांट के अनुसार सौंदर्य शास्त्र को एक ऐसी प्रणाली के रूपमें समझना चाहिए, जो अनुभव को समझने के लिए स्वंय को प्रस्तुत करती है।

इसके अलावा राजनीति से संबधित सौंदर्यशास्त्र, कांट की प्राथमिकता के अनुरूप होता है।जिस प्रकार ये मूल रूप मान व अनुभव के संगठन को निर्धारित करते हैं और इसकी परिस्थितियां प्रदान करते हैं, उसी प्रकार सौंदर्य शास्त्र एक ऐसी प्राकृतिक संरचना प्रणाली में आता है जो हमारे साझा अनुभव की साझा दुनिया को प्रभावित करती है तथा दिक् का विभाजन करता है ऐसे में राजनीति समझ कम या ज्यादा से सम्बन्धीत तो है किन्तु इस प्रकार राजनीति सौंदर्यशास्त्र द्वारा नियंत्रित कि जा सकती है। इसी सन्दर्भ में हम पांडे के गीतों को समझना शुरू करते हैं। सिंह के अनुसार, साहित्य में सृजनात्मकता लोक भाषा या बोलियों (1991) पर आधारित है। पांडेय की ज्यादातर रचनाओं में एक समानता दिखाई देती है । इस तर्क को समर्थन देने के लिए मैं सिंह की आलोचना का सम्मान करता हूँ।

पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार में आजादी से पहले तथा आजादी के बाद भी कई किसान आंदोलन चलते रहे हैं। ये आंदोलन व्यापक राजनीति से सम्बद्ध एवं लोगो द्वारा ही श्रीजीत और उनके ही नेतृत्व में हो रहे है। गोरख पांडे के गीतों में भी आंदोलन के प्रति यही झुकाव देखने को मिलता है किन्तु उसका स्तर भौगोलिक रूप में बहुत व्यापक नहीं है। पटना और भोजपुर के निकट के क्षेत्रों में 1972–1979 के बीच हुए किसान संघर्षों से उनकी कविताओं का गहरा संबंध था। भोजपुरी और हिंदी में पांडे की कविता नक्सल बारी किसान संघर्ष से भी प्रभावित हुई। असमानता के विरुद्ध वे निरंतर संघर्ष से जुड़े रहे हैं। वंचित लोगों की पीड़ा उनकी कविताओं और गीतों में क्षण कि नहीं बल्कि एक पुराने चल रहे संघर्ष का परिणाम है, जो हजारों वर्ष पुराना है। अपने शब्दों में उनकी पीड़ा हजारों साल पुरानी है, उनकी वेदना हजारों साल पुरानी है। वे कहते है की मैं केवल उनके शब्दों को स्पष्ट करता हूं और एक लय और प्रवाह के साथ संचार करता हूं। लेकिन आप डरे हुए हैं

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-I, Issues-16 YEAR- June. -2020

क्योंकि आपको लगता है कि मैं उत्तेज कहूं (प्रणय कृष्ण, 2004,पृष्ठ 22)।

पांडे ने एक ऐसे दौर में लिखना शुरू किया, जिसमे विभिन्न किसान संघर्षों का जिक्र किया जा चुका है। भोजपुरी में उनकी कविताओं का उत्कृष्ट उदाहरण है, जो स्थानीय स्तर पर है और साथ ही उनमें आधुनिक वैज्ञानिक विचरो का भी स्वाद है।

गोरख जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय,नई दिल्ली में पी–यच0डी0 करते हुए भी लिखते रहे उन्होंने सार्त पर भी एक निबंध लिखा था। ६ जनवरी १९८९ को सिजोफ्रेनिया के कारण उन्होनो आत्महत्या का निदान किया वह उस समय दर्शनशास्त्र मेंपी यच डी कर रहे थे।

जाति प्रथा के प्रकाश में पांडे ने मूलतः असमानता, शोषण आदि के मुद्दे पर लिखा है। इसी सार को एक कविता, अछूत की शिकायत में बडे विस्तार से देखा जा सकता है यह कविता सरस्वती नामक पत्रिका में 14 सितंबर 1914 में प्रकाशित हुई थी कविता इस तरह है।

हमारा दिन–रात का शोषण किया जा रहा है, हमें अपने स्वामी–मालिक से भीख मांगनी पड़ती है। ईश्वर भी हमारे दुःख की चिंता नहीं करता, यह शोषण कब तक जारी रहेगा?

यह कविता सामाजिक दशा की प्रकृति का प्रमाण है। यही कहानी है हिराडोम के शोषण और विवशता की। यह कविता दलितों के दिल से शुरू होती है और इस प्रकार दलितों की दशा में लिखी गई जो किसी अन्य पीड़ा पूर्ण कविता से भिन्न है।

ऊपर वर्णित इस तरह के गीत और कविता एवं भोजपुरी साहित्य के अच्छे उदाहरण हैं, जो दलित जनता के जीवन को प्रभावित करते हैं। भोजपुरी लोकगीत सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों के बोझ को प्रतिबिंबित करते हैं। एक और ऐसा ही सन्दर्भ है जो इस प्रकार है–

श्रेल दुश्मन नहीं है, जहाज दुश्मन नहीं है।जो मेरे पति को दूर ले गया पैसा दुश्मन नहीं है (उपाध्याय में उद्धृत, 1972)

इस गीत में विपक्ष का बल उत्पादन की साम्राज्यवादी और उपनिवेशवादी पद्धति पर नहीं, वरन् उत्पादन की विचार धारा और स्वभाव पर है। आर्थिक दृष्टि से लाभ–हानि पर आधारित एक तंत्र के रूप में साम्राज्यवाद सामाजिक और मानवीय संबंधों को बहुत हद तक प्रभावित करता है। ऐसे में यह उपरोक्त गीत का सार बन जाता है। गोरख पांडे का जन्म 1945 में उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के एक गांव 'पंडित मुंडेरा' में हुआ था, जो अब शस्वि महंथ के नाम से जिला कुशीनगर में स्थित है। संस्कृत विश्वविद्यालय से साहित्य में स्नातकोत्तर पूरा कर, वे उसी विश्वविद्यालय में छात्र संघ के अध्यक्ष भी चुने गए। सन् 1973 में उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एक और एम0ए0 किया।उन्होंने उसी विश्वविद्यालय में एक छोटा अनुसंधान पत्र भी प्रस्तुत किया। पत्र का शीर्षक धर्म की मार्क्सवादी धारणा था। भारतीय दर्शन के अनुसार, धारणा शब्द का अर्थ बड़ा होता है अतः इसमें अंग्रेजी शब्द रिलीजन की कोई तुल्यता नहीं होती। हालांकि इस शब्द का सामान्य प्रयोग इसका अंग्रेजी शब्द रिलीजन के बहुत करीब हो जाता है। 1969 के नक्सल आंदोलन के बाद से पांडे ने हिन्दी की मुख्य धारा से अपने को अलग कर लिया। उस समय वे किसानों के आंदोलनों से स्वयंको संबद्ध करते थे और देहाती क्षेत्रों में सक्रिय स्वयं सेवक बन जाते थे। जो इलाहबाद में बहुत सक्रिय था।

गोरख अपनी कविताओं में जन साधारण की मनोवृति की एक तस्वीर प्रस्तुत करते है जैसे उन लोगों का मन कहता हो की हम उन लोगों के दास हैं, जो इस जमीन से मीलों दूर हैं हम ने अपना खून और पसीना बहाया है, फिर भी हमारा सब कुछ खो चुका है लेकिन अब यह हमारे धैर्य की सीमा है, अब हम किसान और मजदूर मिलकर इन चोरों से अपना अधिकार प्राप्त करेंगे। पांडे, जमीन, 1976 (प्रणय–कृष्ण, 2004)

उपरोक्त गीत अनुपस्थति में वेभू–स्वामित्ववाद के मुद्दों पर चर्चा करते हैं, जो अपने खेतों से दूर रहते हुए भी उसके संचालन का सब नियम बनाते हैं।

समस्या की परीधी और उसका हर गीत की आखिरी पंक्तियों में आता है, जिसमें सब मिलकर अपनी भूमि पर कब्जा करने की इच्छा व्यक्त करते है।

जैसा कि मैंने पहले ही उल्लेख किया है, जन मानस में चेतना उत्पन्न करना उनकी कविताओं, गीतों का एकमात्र उद्देश्य है। उनकी अन्य कविताओं में भी देखा जा सकता है सामंती और पूँजीपति राज्य का चरित्र एवं जनता में व्याप्त उनका भय गोरख की कविताओं , स्वर्ग से विदा , भूखी चिडिया एवं भेडिया जैसी कविताओं में उक्त है उनके काव्य का दूसरा पहलू है। साम्यवादी अंतर्राष्ट्रीयवाद, जो उनके प्रसिद्ध गीत जनता के चले पलटनिया में स्पष्ट हो जाता है। इस गीत का उद्देश्य सभी तरह के आंदोलनों को स्पष्ट करना है और एक ऐसी दुनिया की कल्पना है जो मुक्त है और जिसमें किसी भी तरह का शोषण नहीं किया गया है। गीत इस तरह से चला जाता है। जब आम जनता की पलटन चलती है, तो धरती टूट पड़ती है, दुनिया हिल जाती है ल ऐसी पलटन यूरोप, यूएसए, एशिया, अफ्रीका सभी चार महाद्वीपों को हिला देती है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

इसका अर्थ यह है कि संपूर्ण विश्व, विशेष कर ब्रिटिश साम्राज्य, अमरीका, अफ्रीका और एशिया या कोई यह कह सकता है कि प्रथम और तृतीय विश्व सभी विभिन्न प्रकार के जन–आंदोलनों के विभिन्न संदर्भों पर आधारित प्रभाव के अधीन हैं।

पांडे की कविताओं और गीतों में साम्राज्यवाद और सामंतवाद की भावना के खिलाफ मुहिम भी देखा जा सकता है पांडे स्वयं भारतीय जन मोर्चा के साथ जुड़े थे। उनका काव्य किसानों के संघर्षों के बारे में ही नहीं है, बल्कि प्रश्नों के उत्तर भी देता है और सर्वहारा की चेतना की जटिलताओं का उत्तर देता है। इसके अलावा वे स्त्रियों के प्रति बहुत संवेदनशील थे और जमींदारों द्वारा उनके शारीरिक एवं मानसिक शोषण के बारे में अनेक कविताएँ लिखी हैं। जमींदार आज भी हर गांव में हैं और गांव में औरतों का शोषण करतेहैं।

उपरोक्त कविता उस ढंग की चर्चा करती है जिसमें जमींदार और उनके पुरुषों ने अपने कार्य स्थल पर महिलाओं का शोषण किया था। इसी कारण पांडे एक दानव की चर्चा करते हैं जो दालों और अनाजों के खेतों में रहता है। शरारती प्रेत आकृति जमींदार से उपरोक्त कविता में उनकी विचार धरा एवं लोगों की अनुभूति एवं उनकी संवेदना से संबद्ध है।

पांडेय के लिए लोक कला और साहित्य की गरिमा तथा इसे स्वीकार करना अत्यंत आवश्यक है। उनका कहना है कि साहित्य के किसी भी अंशको इस प्रकार से लिखा जाना चाहिए कि उसके पाठक या श्रोता के रूप में जिक्र किये गए विषयों को पूर्ण रूपमें समझ सके (प्रणय कृष्ण 2004) इसी कारण से होली पर उनके गीतों में से एक गीत जागीरदारों द्वारा किसानों के शोषण का गीत बन जाता है।

मुझे बताओ, आप मकान मालिक हो? अकाउंटेंट हो? जिसका नाम इस जमीन है? यह देश कौन है? क्या कागज?, कलम क्या है? क्या घोड़ा है, लगाम क्या है? इसके बाद 1890 में जो सेफ ब्लॉक का मार्क्सवादी तौर पर विश्लेषण और उच्च स्तरीय विश्लेषण करने के बाद एक आदर्श विचारधारा ने यह स्पष्ट कर दिया कि वह कैसे समाज में हर तरह के उत्पादन और पुनरुत्पादन का आधार है, लेकिन अगर तर्क को आर्थिक तत्व के रूप में प्रस्तुत किया जाता है–केवल निर्धारक पक्ष होने के कारण, तो इसका अर्थ गलत होगा? अधोरचना के विविध तत्व, श्रेणी संघर्ष के राजनीति रूप में है , इसके परिणाम, विधि के रूप, धार्मिक विचार और दर्शन भी वैचारिक संरचना के रूप निर्धारित करते हैं। इसलिए यहां यह कहा जा सकता है कि पांडे की कविताएं और गीत सभी प्रकार के शोषण से सम्बद्ध कड़ी हैं।

चुने हुए साहित्य के विश्लेषण में प्रतिबिंबित मुख्य विषय कार्य के मुद्दे के आस पास ही रहते, गरिमा के साथ जीना, भूमि का स्वामित्व, जागीर और ग्राम–कुलीन वर्ग की स्त्रियों का शोषण, जाति–प्रथा पर आधारित पदानुक्रम आदि, के साथ वे किसानों को प्रोत्साहित करते हैं कि वे प्रभुत्व की भूमिको उखाड़ दें, भूमि को अपने अधिकार मेंलें और आवश्यकता होने पर हथियार भी उठालें।

उपर्युक्त तर्कों के आधार पर यह बताया जा सकता है कि इस प्रकार का साहित्य एक सामाजिक उत्पाद है क्योंकि इसे समाज में उत्पादित किया गया है और इसका उपयोग भी किया गया है पर इसके साथ–साथ साहित्य के बारे में व्यापक व्याख्या करना भी बहुत कठिन है। साहित्य का यह कार्य जन मानस की वेदना, संवेदना एवं अनुभूतियों का एक जागृत उदाहरण एवं सूचक है।

1985 में गोरख पांडे प्रगतिशील सांकृतिक और साहित्यिक मंचकृजन संस्कृति मंच के अग्रणी महासचिव बने। उनके साहित्य में जन संघर्ष की वास्तविकता स्पष्ट है। मार्क्स और लेनिन की विचारधारा निश्चय ही उनकी रचना के पीछे का मुख्य सिद्धांत है। अपनी (उपरोक्त) कविता में उन्होंने अपने नाम स्पष्ट रूप से एक नारा के रूप में दिए हैं। मार्क्स, लेनिन और माओ पर चार पंक्तियाँ इस बात की चर्चा करती हैं कि किस प्रकार मार्क्स और लेनिन ने आंदोलन का नेतृत्व अपनी विचार धारा से किया है। माओ उस आंदोलन को प्रकाश प्रदान करता है जिसका अर्थ यह है कि वह उस मार्ग को दिखाता है।

पांडे ने एक और कविता इन्कलाब (क्रांति गीत) में गरीबों के सामने होने वाली विभिन्न समस्याओं पर विचार–विमर्श किया था। गीत इस प्रकार है हमारी इच्छाओं का नाम पूछताछ है, हमारे प्रयास का नाम है पूछ ताछ, आज हमारे पास एक मात्र कार्य है, सभी लूटपाट और लूट का जवाब मैं और मैं ही सारे अभाव का उत्तर हूँ यातना, हमारे सभी सवालों का जवाब है सभी सामंती शक्तियों का अंत हमारी पीड़ा है हर नई दुनिया का विकास पूछ ताछ है, विकास इन्कलाब है

सुनो! छलित लोगों की आवाज इनकलाब है, उम्मीद की किरण है, इसलिए खड़ें हो जाओं क्योंकि हमारे जैसे वंचित लोगों का एकमात्र तरीका इनकलाब है और चलते रहो, क्योंकि समय का आह्वान भी है पूछताछ एक अन्य कविता में भी वो खेतिहर और भूमिहीन खेतिहर मजदूरों की समस्याओं पर विचार करते हैं। कविता का शीर्षक गुहार (अनुरोध) है। इस कविता में साथी किसान

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

अपने अधिकारों की खातिर खड़े होने और अपनी जमीन जमीनदारों से ले जाने के लिए एक–दूसरे को निहत्था बताते हैं।

किसानों का संघर्ष अब शुरू हो चुका है, बड़े भाई हमारे साथ लड़ों। कब तक आप अपनी आँखों के बंद होने के साथ सो जाओगे? और खुशी के कितने समय तक सपने देखते रहोगे? तुम्हारे पसीने की बूंदें सब कुछ सोने में बदल देती हैं, लेकिन वे तुम्हें चूसते है और अपने पेट भरते हैं और तुम्हारे लिए सिर्फ थोड़ा सा अनाज है, बड़े भाई हमारे साथ लड़ो आओ वे अपने बच्चों के साथ अपनी सेनाएं बनाते हैं और उन्हें आप का रास्ता तोड़ देने का आदेश देते हैं और कहते है यह जेल है, यह कोर्ट है ओह, बड़े भाई हमारे साथ लड़ो आओ दुनिया आपकी उंगलियों पर है लेकिन आपको जो भी मिलता है वह नरक की आग है। उठो, हम लोगो को इस संरचना को उखाड़ना है, हमारे साथ लड़ाई लड़ो आओ ओह, बड़े भाई यह सेना अपने ही खून से और आग बाढती है खेतों और कारखानों की लाल सेना, रात और दिन तुम्हें बुला रही है ओह, बड़े भाई हमारे साथ लड़ो आओ

**उपसंहार–** पांडे खुद एक मार्क्सवादी थे और सीपीआई (एमएल) के सदस्य थे। उनके गीतों में ऊंची जाति के जमींदारों और गरीब तथा निचले वर्गों पर हावी जातियों के शोषण का वर्णन मिलता है। इनमें कुछ कविताएं, जैसी ओह, इंकलाब और गुहार ने शोषकों के विरुद्ध क्रांति के आह्वान पर चर्चा की है। इन कविताओं से यह भी संकेत मिलता है कि अब किसानों ने अपने को एक वर्ग के रूप में पहचान लिया है और अब उनके बीच एक जुटता की भावना है।

वह भोजपुरी बोलने वाले क्षेत्र के थे और भोजपुरी मजदूरों की समस्या से की और इन पर प्रतिक्रिया के लिए उन्हें प्रवेश बिन्दु की जरूरत नहीं पड़ी। वह बूर्डीयू के साहित्य के क्षेत्र के समान ही है जो शक्ति के क्षेत्र में स्थित है। यह शक्ति उच्च वर्ग के लोगों के हाथ में थी अतः पांडे की भाषा को इस रूप में अपनाया गया था, जिससे समाज की सत्तांको एक दूसरे के प्रति वैर भाव के रूप में देखा जा सके। यहां दिलचस्प बात यह है कि पांडे स्वयं एक ब्राह्मण परिवार के थे, जिसे उच्च श्रेणी का माना जाता है। अतः पांडे शक्तिशाली बने रहे।

जैसा कि मै शरीर और एल्थूजर ने बताया है, कोई भी साहित्य किसी प्रकार की विचार धारा से निर्देशान्ति होता है। साहित्य एक वैचारिक ढांचें का ही अंग है लेकिन इसमें संभावना है कि साहित्य कला का संबंध विचारधारा शीर्षक गुहार (अनुरोध) है। इस कविता में साथी किसान से भी है और उस से भी दूर हो जाता है। पहले मामले में साहित्य किसी प्रकार की विचार धारा को प्रतिबिंबित करता है, जो सामान्य तथा प्रधान विचारधारा होती है और दूसरे में एक प्रकार की विचार धारा प्रतिबिंबित होती है जो प्रभावी विचारधारा के विपरीत होती है और एक तरह से प्रभावी विचारधारा को चुनौती देती है। यहां पांडेय का साहित्य दूसरी श्रेणी में आता है जिसमें प्रमुख वर्ग के लोगों के विचारधारा को चुनौती दी जाती है, और इससे उनके विरुद्ध खतरा पैदा हो जाता है। कवि की कविताओं और गीतों में इस कविता का अच्छा खासा उल्लेख मिलता है। उनके काम की विषय वस्तु का वर्णन मुख्यतया स्थानीय सामाजिक संरचना के निचले वर्गों की सामाजिक स्थिति से होता है। विषय के अनुसार कविताओं और गीतों में एक ही है।

## संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. एल्थूज़र, ए. 1965. फॉर मार्क्स. लंदनः वर्सो।
2. बख्तिन, एम. 1984. स्पीच जार्नस एण्ड अदरलेट एस्सेज़ आस्टिनः युनिवर्सिटी ऑफ टेक्सास प्रेस।
3. बार्थ्स, आर, 1975, द प्लेज़र आफॅ द टेक्सट ट्रान्सलेटेड–रिर्चडमिलर. लंदनः हिल एण्ड वॉन्ग।
4. बुर्दियो, पी. 1966. द रूल्स ऑफ आर्टः जेनेसिस एण्ड स्ट्रक्चर ऑफ द लिटरैरी फील्ड. कैलिफोर्लियाः स्टैंफोर्ड युनिवर्सिट प्रेस।
5. बुर्दियो, पी. 1983. द फील्ड ऑफ कल्चरलपोडकान : एस्सेज़ ऑन आर्ट एण्ड लिटरेचर, कैम्बिजः पालिटी प्रेस।
6. डालमिया, वी. 2006. इंडिया जलिट रैरी हिस्ट्र–एस्सेज़ आन टेन्थ सेंचुरी. नई दिल्लीः पर मानेन्ट ब्लैक।
7. डिकेन्स, सी. 1838. ओलिवरट्विस्ट. लन्दनः चॉपमान एण्ड हॉल।
8. ईगल्टन, टी. 1976. क्रिटिसिज़्म एण्ड आईडियो लॉजी लंदनः नई दिल्ली लेट बुक्सईगल्टन, टी. 1976. मर्क्सिज़्म एण्ड लिटरैरीक्रिटिसिज़्म. लंदनः मैथ्यूज एण्ड कंपनीलिमिटेड।
9. ईगल्टन, टी. 1976. रेमण्डविलियम्स 'इम्पॉर्टेन्टवर्क्स. न्यूलेटरिव्यू–जनवरी.फरवरी 1976।
10. ईलल, जे. 1973. प्रोपॉगैन्डा. द फार्मेषनऑफमेन्स एटिट्यूड. न्यूयॉर्कः विंटेजबुक्स।
11. फोक्स, ए.पी. 1983. लिटरेचर एण्ड प्रोपागैन्डा. लंदन, मैथ्यूज एण्ड कंपनीलिमिटेड।
12. गोल्डमॉन, एल. 1975. दूर्वड्ससोष्यॉलजीऑफ द नावेल. लंदनः टैविस्टॉक पब्लिकेशन सलिमिटेड।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

13. ग्रामी, ए. 1977. सलेक्शन्स फ्रॉम पॉलिटिकल राईटिंग्स,1910–1926. लंदनः लॉरेन्स एण्ड विशॉर्ट।
14. ग्रिफिन, रॉबर्ट एण्ड टिकटिल्मॉन. 1998. द एस्थेटिक्स ऑफ थार्स्टिन वेबलेनरिविज़िटेड इन कल्चरल डाईनॉमिक्स (10 नवम्बर 1998) सेज पब्लिकेशन्स लिमिटेड. ग्रिसवॉल्ड, डब्ल्यू. 1993. रिसेन्टमूव इनद सोशियॉलजी ऑफ लिटरेचर, एनुअल रिव्यू ऑफ सोशियॉलजी. 1993, 19:455–67।।
14. आईसेर, डब्ल्यू. 1978 द इम्प्लाईडरीडर. पैर्टन्स ऑफ कम्यूनिकेशनइनप्रोज़ फिक्शन फ्रॉमबन्यान टूरैकेट बाल्टिमोर. ज़ान्सहाफ्किन्स युनिवर्सिटी. लेनिन वी. आई. 1987. एसेन्शियल वर्क्स ऑफ लेनिन. श्वॉटइज़ टूबी डन?श्श एण्ड अदर राईटिंग्स. लंदनः डोवर पब्लिकेशन्स।
15. कॉन्ट, आई. 1900. क्रिटीक ऑफ प्योररीज़न. न्यूयॉर्कः कोलोनियल प्रेस. लूकाच, जी. 1972. पोलिटिकल राईटिंग्स. 1919–1929. लंदनः एन. एल.बी. मैशरी, पी. 1995. द आब्ज़ेक्ट ऑफ लिटरेचर.कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज युनिवर्सिटी प्रेस।
16. मार्क्स, के. एण्ड एंगेल्स, एफ. 1938. जर्मन आईडियॉलोजी लंदनः लॉरेन्स एण्ड विर्शाट।
17. मार्क्स, के. एण्ड एंगेल्स, एफ. 1970. कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो, होमन्ड्स वर्थ : मेथ्युनबुक्स।
18. मार्क्स, के. एण्ड एंगेल्स, फ. 1978. ऑन लिटेरेचर एण्ड आर्ट. मॉस्कोः प्राग्रेसिव पब्लिकेशन हाउस।
19. मार्क्स, के. 1979. ए कॉन्ट्रिब्यूशनटू द क्रीटीक ऑफ पोलिटिकल इकॉनोमी. लंदनः इण्टरनेशनल पब्लिकेशन।
20. ओरसिनी, एफ. 2002. हिंदी पब्लिकस्फेयर 1920–1940: लैंगुएज एण्ड लिटरेचरइन द एज ऑफ नेशनलिज़्म. नईदिल्लीः ऑक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस।
21. पांडे, जी. 1983. जागते रहो सोने वालों. दिल्लीः राधकृष्ण प्रकाशन।
22. पांडे, एम. 2006. साहित्य के समाजशास्त्र की भूमिका, दिल्लीः गोयल इण्टरप्राइजेज़।
23. प्लॉखनोव, जी. 1998. ऑनद एलीड क्राइसिस इन मार्क्सिज़्म, सलेक्टेड फिलोसोफिकल वर्क्स इन फाइ ववाल्यूम्स।
23. प्रकाश, ए. 2002. एप्रोचेज़ इनलिटरैरी थियरीः मार्क्सिज़्म. दिल्लीः वर्ल्डव्यू पब्लिकेशन्स।
25. पोलॉक, एस. 2004. लिटरैरी कल्च र्सइनट्टिस्ट्रः रीकन्सट्रक्शन्स फ्रॉम साउथ एशिया, नईदिल्लीः आक्सॅफोर्ड युलिवर्सिटी प्रेस।
26. पण्य कृष्ण. 2004. समय का पहिया. सलेक्टेडपोएम्स ऑफ गोरख पांडे. मुम्बई, मेरठः सम्वाद।
27. राय, ए. 2000. हिन्दी नेशनलिज़्म. दिल्लीः ओरियण्ट लांगमैन।
28. राय, एस . 2013. टूलीडिंग भोजपुरी आर्टिस्ट्स. फैजाबादः कोशन पब्लिकेशन्स।
29. रैन्सियर, जे. फ्रॉम पोलिटिक्सटू एस्थेटिक्स. 2 वाल्यूम, 28डी. ओ. आई. 103366 / पैरा. 2005. 28.1.13 आइ. एस. एस. एन. 0264–8334. उपलब्ध ऑनलाइन. मार्च 2005।
30. रोज़, जे. 2007. द लास्टरे ज़िस्टेन्स. लंदनः वर्सो।
31. सिंह, एन. पी. 2005. भिखारी ठाकुर रचनावली. पटनाः बिहार राष्ट्र भाषा परिषद।
32. सिंह, एन. 1991. कार्ल मार्क्सः आर्ट एण्ड लिटरै रीक्रिटिसिज़्म. नईदिल्लीः राज कमल प्रकाशन।
33. स्टार्क, उ. 2007. ऐन एम्पायर ऑफ बुक्सः द नवल किशोर प्रेस एण्ड द डियूजन ऑफ द प्रिटेडवर्ल्डइन कोलोलियल इंडिया. नईदिल्लीः परमानेन्ट ब्लैक।
34. तिवारी, यू. एन. 1983. भोजपुरी भाषा और साहित्य. पटनाः पटनाः बिहार राष्ट्र भाषा परिषद।
35. उपाध्याय, के. 1972. भोजपुरी साहित्य का इतिहास, वाराणसीः इंडियन फोक कल्चर इंसटिट्यूट।
36. वाल्मिकी, ओ. पी. 2003. जूठन–एन अनटचेबल्स लाईफ. कोलम्बियाः कोलम्बिया युनिवर्सिटी प्रेस।
36. विलियम्स, आर. 1999. मार्क्सिज़्म एण्ड लिटरेचर. लंदन राउटलेज।
37. दामोदरन, एस. 2006. प्रोटेस्टथ्रू म्यूज़िक. डाक्युमेन्टेशन एण्ड एनालिसिस ऑफ द स्ट्रक्चर, कन्टेंट एण्ड कन्टेक्स्ट ऑफ द म्यूजिकलट्रैडिशन ऑफ इप्टा. दिल्लीः इन्डिपेन्डेटफेलोशिप, सराय, सी.एस.डी.एस.।
38. सुलभ, एच. 2006. 'बटोही' एन रंग प्रसंग–वर्ष 9, अंक 3, जुलाई–सितम्बर. नई दिल्लीः राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय।
39 नोट : वीकीपीडिया (गुगल): इंटरनेट. कुछ विशेष एंव अनुप्लब्ध संदर्भ हेतु।

*****